मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 5

BHDC–104

बी. ए. (ऑनर्स) हिन्दी (सी. बी. सी. एस.)

(बी. ए. एच. डी. एच.)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2025

बी.एच.डो.सी.–104 : आधुनिक हिन्दी कविता (छायावाद तक)

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *कुल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **पहला** प्रश्न अनिवार्य है।*

---

1. निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं **तीन** की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 3×12=36

(क) जायें सिद्धि पावें वे सुख से,

दुखी न हों इस जन के दु:ख से,

उपालम्भ दूँ मैं किस मुख से ?

आज अधिक वे भाते।

गये, लौट भी वे आयेंगे,

कुछ अपूर्व अनुपम लायेंगे,

रोते प्राण उन्हें पायेंगे,

पर क्या गाते-गाते ?

(ख) खग-कुल कुल-कुल-सा बोल रहा,

किसलय का अंचल डोल रहा,

लो यह लतिका भी भर लाई—

मधु मुकुल नवल रस गागरी।

अधरों में राग अमंद पिये,

अलकों में मलयज बंद किये,

तू अब तक सोई है आली

आँखों में भरे विराग री।

(ग) कोई न छायादार

पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार;

श्याम तन, भर बँधा यौवन,

नत नयन, प्रिय कर्मरत मन,

गुरु हथौड़ा हाथ,

करती बार-बार प्रहार—

सामने तरु-मालिका अट्टालिका प्राकार।

(घ) प्रथम रश्मि का आना रंगिणी

तूने कैसे पहचाना ?

कहाँ-कहाँ हे बाल विहंगिनी

पाया तूने यह गाना ?

सोई थी तू स्वप्न नीड़ में

पंखों के सुख में छिपकर,

ऊँघ रहे थे, घूम द्वार पर,

प्रहरी से जुगनू नाना।

(ङ) झंझा है दिग्भ्रांत रात की मूर्छा गहरी,

आज पुजारी बने, ज्योति का यह लघु प्रहरी,

जब तक लौटे दिन की हलचल,

तब तक यह जागेगा प्रतिपल,

रेखाओं से भर आभा-जल

दूत साँझ का इसे प्रभाती तक चलने दो!

2. भारतेन्दुयुगीन काव्य की विशेषताएँ बताइए। 16

3. द्विवेदीयुगीन काव्य के अभिव्यंजना-शिल्प पर प्रकाश डालिए। 16

4. मैथिलीशरण गुप्त के इतिहासबोध को रेखांकित कीजिए। 16

5. 'प्रिय प्रवास' की अन्तर्वस्तु पर प्रकाश डालिए। 16

6. छायावाद के महत्व की चर्चा कीजिए। 16

7. जयशंकर प्रसाद के काव्य के प्रमुख स्वरों का संक्षिप्त परिचय दीजिए। 16

8. सुमित्रानंदन पंत के काव्य-शिल्प का विवेचन कीजिए। 16

9. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए :

$2 \times 8 = 16$

(क) पंडित बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'

(ख) रामनरेश त्रिपाठी

(ग) निराला के काव्य-बिम्ब

(घ) महादेवी वर्मा की वेदनानुभूति

× × × × ×